ORIGINAL ARTICLE ISSN:-2230-7850

Indian Streams Research Journal

"जनपद सहारनपुर के स्ववितत्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत् अध्यापक व अध्यापिकाओं के कृत्य चिंता स्तर का तुलनात्मक अध्ययन"

पूनम देवी [1] , अजीत सिंह [2] , महक सिंह [3]

[1]प्रवक्ता, शताब्दी इन्सटीट्यूट ऑफ एजूकेशन, मेरठ.
[2]प्रवक्ता, चौ. शिवचरण सिंह डिग्री कॉलेज, बागपत.
[3]प्रवक्ता टी.जी.टी. कॉलेज ऑफ एजूकेशन, सहारनपुर.

सारांश :-

चिन्तनशीलहोने कारण मनुष्य को संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी कहा गया है। समस्त जीवधारियों में मनुष्य ही सर्वाधिक चिन्तनशील प्राणी है। यदि यही चिन्तन नकारात्मक हो जाये, तो यह चिन्ता में परिवर्तित हो जाता है। चिन्ता हृदयगत छिपी हुई परेशानियों के प्रति मस्तिष्क की प्रतिक्रिया है। जो व्यक्ति चिन्ता से पीड़ित होता है वह अपने कार्य को सफल बनाने के पूर्ण व्यक्ति का प्रयोग नहीं कर सकता है। किसी व्यक्ति की चिन्ता को देने वाले विषयीगत कारण सचेतन भी हो सकते हैं। जबकि किसी भी कार्य को करने से पूर्व व्यक्ति की सोच–विचार, कार्य करने की जिज्ञासा, चेहरे के हाव–भाव में जो भय अथवा चिन्ता के लक्षण परिलक्षित होते हैं। वह 'कृत्य चिन्ता' कहलाती है।

प्रस्तावना :

कृत्य चिन्ता के लक्षण स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत् अध्यापक व अध्यापिकाओं में भी पाये जाते हैं। उन्हें यह चिन्ता सदैव रहती है कि हम जिस कार्य को कर रहे हैं, वह स्थायी रहेगा अथवा नहीं वह स्वयं पर भी विश्वास कम करने लगते हैं, जिससे उनकी चिन्ता प्रतिदिन बढ़ती रहती है। उनके अन्दर कार्य को करने की क्षमता होते हुए भी वह उसका पूर्ण लाभ नहीं उठा पाते। इसका मुख्य कारण हैउनके वरिष्ठ प्रवक्ता, प्राचार्य, सचिव आदि का उनके साथ मित्रता तथा सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार न करना। जिस कारण वे अपने कार्य को ही चिन्ता का विषय मानने लगते हैं।वह अपनी पदोन्नति के लिए अपने अधिकार व कर्त्तव्यों को भूलकर चेयरमैन एवं प्रबन्ध समिति की सेवा में लीन हो जाता है। जिसके परिणामस्वरूप वह कई बार अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाता। जिस कारण से वह अपने कार्य प्रगति के प्रति चिन्ता ग्रस्त रहता है।

1.1 अध्ययन की आवश्यकता, न्यायसंगतता तथा सार्थकता :

स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत अध्यपक व अध्यपिकाएं दोनों ही अपने कार्य के प्रति चिंता ग्रस्त रहते हैं। जो एक विषाद के रूप में हमारे सामने एक बहुत बड़ी समस्या बनकर आयी है। वर्तमान समय में व्यावसायिक, सामाजिक, पारिवारिक सभी क्षेत्रों में समस्याओं की अधिकता है। इन सब क्षेत्रों के साथ शिक्षा का क्षेत्र भी समस्याओं से अछूता नहीं है।

पूर्व में हुए शोध अध्ययनों के पुनरावलोकन तथा अपने स्वयं के अनुभव द्वारा शोधार्थी कुछ ऐसा महसूस कर रहा है कि आज का अध्यापक अपने कार्य की चिंता को लेकर प्रायः अधिक चिंतित रहता है। तथा यही कार्य के प्रति चिंता ही कृत्य चिंता में बदल जाती है। कृत्य चिंता को ध्यान में रखते हुए षोधार्थी ने प्रस्तुत शोध में यह जानने की कोशिश की है, कि कृत्य चिंता का स्तर अध्यापक व अध्यापिकाओं दोनों में से किसमें अधिक पाया जाता है। क्या दोनों का कृत्य चिंता स्तर सामान्य है।

''जनपद–सहारनपुर के स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत अध्यापक व अध्यापिकाओं के कृत्य चिंता स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।''

1.2 मुख्य प्रत्ययों का अर्थ एवं परिभाषा :

1.2.1 स्ववित्तपोषित :

'स्ववित्तपोषित' षब्द से तात्पर्य किसी भी व्यक्ति अथवा प्रबन्ध समिति के स्वयं के परिश्रम एवं धन से निर्मित की गई संस्था आदि से होता है। जिसमें सरकार व बाह्य व्यक्तियों का कोई हस्तक्षेप नहीं होता है उसे स्ववित्तपोषित कहा जाता है।

1.2.2 स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षण संस्थान :

किसी व्यक्ति के कठिन परिश्रम प्रयास व उत्साह के परिणामस्वरूप निर्मित ऐसी संस्था जिसमें अध्यापकों को प्रशिक्षित करके समाज को शिक्षित किया जाता है। इस संस्था को सरकार व बाहर से कोई आर्थिक सहायता प्राप्त नहीं होती है तथा सरकार व बाह्य व्यक्ति इनके कार्यों में कोई हस्तक्षेप नहीं करते हैं। स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षण संस्थान'कहलाती है।

1.2.3 कृत्य चिंता :

प्रत्येक व्यक्ति के मस्तिष्क में किसी भी कार्य से सम्बन्धित चिंता अवश्य पायी जाती है। किसी भी कार्य को आरम्भ करने से पूर्व व्यक्ति की सोच, कार्य करने की जिज्ञासा, चेहरे के हाव–भाव में भय कार्य को करने के लिए मस्तिष्क उद्देलन या हलचल इत्यादि में चिंता के लक्षण परिलक्षित होते हैं। ये सभी लक्षण कृत्य चिंता के अन्तर्गत आते हैं।

परिभाषायें –

चिंता के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए विभिन्न विद्वानों ने भिन्न–भिन्न परिभाषायें दी हैं–

फ्रायड के अनुसार–''चिन्ता का कारण अचेतन का संघर्ष होता है।''

स्पिल बर्गर (1960) के अनुसार–''चिंता मस्तिष्क में उद्देश्य के कारण होती है तथा जिसका मुख्य कारण मस्तिष्क तनाव बेचैनी व नकारात्मक सोच है।''

1.3 शोध अध्याय के उद्देश्य :

प्रत्येक लघु शोध अध्ययन के कुछ मुख्य व कुछ उप उद्देश्य होते हैं। प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य–

मुख्य उद्देश्य –''जनपद–सहारनपुर के स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत अध्यापक व अध्यापिकाओं के कृत्य चिंता स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।''

उप उद्देश्य –

मुख्य उद्देश्य को प्राप्त करने हेतु निम्नलिखित उपउद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–

(i)जनपद–सहारनपुर के स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत अध्यापकों के कृत्य चिंता स्तर का अध्ययन करना।
(ii)जनपद–सहारनपुर के स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत अध्यापिकाओं के कृत्य चिंता स्तर का अध्ययन करना।

1.4अध्ययन की परिकल्पानाएं:–

प्रस्तावित लघु शोध अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने शून्य परिकल्पनाओं का चयन किया है। जो निम्नलिखित हैं–

मुख्य परिकल्पना –

''जनपद–सहारनपुर के स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत अध्यापक व अध्यापिकाओं के कृत्य चिंता स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।''

उप–परिकल्पनाएं–

मुख्य परिकल्पना के अतिरिक्त कुछ उपपरिकल्पनाएं हैं। जो निम्नलिखित हैं–

(i)जनपद–सहारनपुर के स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत अध्यापिकाओं के कृत्य चिंता का स्तर उच्च नही होता है।
(ii)जनपद–सहारनपुर के स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत अध्यापक के कृत्य चिंता का स्तर उच्च नही होता है।

2.1 शोध विधि –

शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोधकर्ता हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

2.2 जनसंख्या :

प्रस्तुत शोध अध्ययन जनसंख्या के रूप में शोधार्थी द्वारा उत्तर प्रदेश राज्य के सहारनपुर जिले में सिथित स्ववित्तपोषित बी0एड0 प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत अध्यापक व अध्यापिकाओं किया गया है।

2.3 न्यायदर्श :

प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा सम्भाव्य न्यादर्श की साधारण अनियमित न्यादर्श प्रविधि के अन्तर्गत आने वाली लाटरी विधि द्वारा उ.प्र. राज्य के सहारनपुर जिले 10 स्ववित्त्पोषित बी.एड. प्रशिक्षण संस्थानो में कार्यरत 66 अध्यापक (33–अध्यापक व 33 अध्यापिकाओं) का चयन किया गया है।

2.4 उपकरण:–

अध्यापकों (अध्यापक व अध्यापिकाओं) की कृत्य चिंता स्तर का पता लगाने के लिए शोधार्थी ने कृत्य चिंता मापनी प्रश्नावली का प्रयोग करना उचित समझा, जो डॉ. ए.के. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित एवं मानवीकृत है।

2.5. आँकड़ों का संग्रहण :

शोधार्थी ने अध्ययन हेतु चयनित समस्या के अध्ययन के लिए ऑकड़ों के संग्रहण के लिए 10 स्ववित्त्पोषित बी0एड0 प्रशिक्षण संस्थानों का चयन किया। कृत चिन्ता के मापन हेतु चयनित प्रमापीकृत मापनीं को सभी चयनित अध्यापक अध्यापिकाओं पर प्रशासित किया गया। शोधार्थी ने प्रमापनीं को प्रशासित करने के बाद प्रश्न प्रपत्रों को एकत्रित करके प्रमापनी की निर्देश पुस्तिका में दिये गये अंकन विधि के अनुसार उनका अंकन किया। दोनों प्रमापनियों के प्रश्न प्रपत्रों के अंकन के बाद प्राप्त आंकड़ों को आवश्यकतानुसार सारणीबद्ध किया।

2.6 प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ :

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निम्नलिखित सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया –

1.मध्यमान
2.प्रमाणिक विचलन
3.टी–टेस्ट

3.0 आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु संकलित आँकड़ों की विश्लेषण एवं व्याख्या निम्न प्रकार हैः–

मुख्य परिकल्पना(H_0.)

सारणी संख्या (4.0)
अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की कृत्य चिंता स्तर के अध्ययन से प्राप्त ''टी''–मान

क्र.सं.	समूह	N	M	S.D.	t–मान	सार्थकता स्तर		निष्कर्ष
1.	अध्यापक	33	59.85	7.98	0.66	0.05	0.01	सार्थक अन्तर नहीं है।
2.	अध्यापिकाएं	33	58.58	7.69		1.97	2.60	

व्याख्या –

1.जनपद सहारनपुर के स्ववित्तपोषित बी. एड. प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत अध्यापक व अध्यापिकाओं की कृत चिंता स्तर का अध्ययन किया गया। प्राप्त अंको का मध्यमान क्रमषः 59.85 एवं 58.58 प्राप्त हुआ।
2.अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं की कृत चिंता के अध्ययन से प्राप्त अंको का मानक विचलन क्रमषः 7.98 एवं 7.69 प्राप्त हुआ।
3.''टी–तालिका'' में 64 मुक्तांश पर देखा जाय तो ''टी'' का गणित मान 0.66 , ''टी'' के सारणी मूल्य 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.60 तथा 0.05 सार्थकता के स्तर पर 1.97 से कम है। जिससे स्पष्ट होता है कि '' जनपद सहारनपुर के स्ववित्तपोषित बी. एड. प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत अध्यापक व अध्यापिकाओं की कृत चिंता स्तर में सार्थक अन्तर नही है।

अतः शोधार्थी द्वारा बनाई गयी शून्य परिकल्पना ''जनपद सहारनपुर के स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत अध्यापकों व अध्यापिकाओं के कृत्य चिंता स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है,'' स्वीकृत होती है।

उप–परिकल्पनाएँ :

प्रथम उप–परिकल्पना (H_0.1)

सारणी संख्या (4.1)
कृत्य चिंता के प्रत्येक स्तर में आने वाले अध्यापिकाओ की संख्या तथा प्रतिशत मान

क्र.सं.	कृत्य चिंता का स्तर	अध्यापिकाओं की संख्या	प्रतिशत(%)
1.	उच्च	03	09
2.	निम्न	30	91
कुल योग		33	100

व्याख्या –

जनपद सहारनपुर के स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत कुल 33 अध्यापिकाओं से कृत्य चिंता का अध्ययन किया गया। जिनमें से कृत्य चिंता के प्रत्येक स्तर पर आने वाली अध्यापिकाओं की संख्या व प्रतिशत का विवरण निम्न है–

1.सभी अध्यापिकाओं में से 9प्रतिशत (3 अध्यापिकाओं) अध्यापिकाओं में कृत्य चिंता का स्तर उच्च पाया गया।
2.सभी अध्यापिकाओं में से 91प्रतिशत (30 अध्यापिकाओं) अध्यापिकाओं की कृत्य चिंता का स्तर निम्न पाया गया।

अतः अध्ययन द्वारा यह स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक 91प्रतिशत (30 अध्यापिकाओं) अध्यापिकाओं में कृत्य चिंता का स्तर निम्त है। जिससे स्पष्ट होता है कि शोधार्थी द्वारा निर्मित परिकल्पनाएं ''जनपद सहारनपुर के बी.एड. प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत अध्यापिकाओं में कृत्य चिंता स्तर उच्च नहीं होता है।'' स्वीकृत होती है।

द्वितीय उप–परिकल्पना (H_0.2) –

सारणी संख्या (4.2)
कृत्य चिंता के प्रत्येक स्तर में आने वाले अध्यापिकों की संख्या तथा प्रतिशत मान

क्र.सं.	कृत्य चिंता का स्तर	अध्यापकों की संख्या	प्रति□त
1.	उच्च	04	12
2.	निम्न	29	88
कुल योग		33	100

व्याख्या –

जनपद सहारनपुर के स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत कुल 33 अध्यापकों से कृत्य चिंता का अध्ययन किया गया। जिनमें से कृत्य चिंता के प्रत्येक स्तर पर आने वाली अध्यापकों की संख्या व प्रतिशत का विवरण निम्न है–

1.सभी अध्यापकों में से 12 प्रतिशत (4 अध्यापकों) अध्यापकों में कृत्य चिंता का स्तर उच्च पाया गया।
2.सभी अध्यापकों में से 88 प्रतिशत (29 अध्यापकों) अध्यापकों की कृत्य चिंता का स्तर निम्न पाया गया।

अतः अध्ययन द्वारा यह स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक 88 प्रतिशत (29 अध्यापकों) अध्यापकों में कृत्य चिंता का स्तर निम्न है। जिससे स्पष्ट होता है कि शोधार्थी द्वारा निर्मित परिकल्पना ''जनपद सहारनपुर के बी0एड0 प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत अध्यापकों में कृत्य चिंता स्तर उच्च नहीं होता है,'' स्वीकृत होती है।

4.0 अध्ययन के परिणाम एवं निष्कर्ष :

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए षोधार्थी ने अपने लघुशोध अध्ययन में उद्देष्यों के आधार पर निम्नलिखित परिणामों एवं निष्कर्षों की व्याख्या की है –

4.1 अध्ययन से प्राप्त परिणाम :

अध्ययन से प्राप्त मुख्य परिणाम निम्नलिखित हैं –

1.जनपद सहारनपुर के स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत अध्यापकों व अध्यापिकाओं के कृत्य चिंता स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः कहा जा सकता है कि जनपद सहारनपुर के स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत अध्यापकों व अध्यापिकाओं दोनों में कृत्य चिंता का स्तर लगभग समान हैं।
2.जनपद सहारनपुर के स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत अध्यापिकाओं में कृत्य चिंता का स्तर निम्न पाया गया। कुछ ही अध्यापिकाएं ऐसी हैं जिनमें कृत्य चिंता का स्तर उच्च है।
3.जनपद सहारनपुर के स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत अधिकांश अध्यापकों में कृत्य चिंता का स्तर निम्न पाया गया। कुछ ही अध्यापक ऐसे होते हैं जिनमें कृत्य चिंता का स्तर उच्च होता है।

4.2 निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम–स्वरूप यह निष्कर्ष पाया गया कि जनपद सहारनपुर के स्ववित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत अध्यापकों व अध्यापिकाओं में कृत्य चिंता स्तर निम्न होता है। दोनों के मध्य कृत्य चिंता स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है। अतः अध्यापकों व अध्यापिकाओं दोनों में कृत्य चिंता का स्तर लगभग समान होता हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1.कपिल, डॉ॰ एस॰ के॰, अनुसंधान विधियां, आगरा : भार्गव बुक हाउस।
2.अरोड़ा, रीता मारवाह, सुदेश, शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी शिक्षा, जयपुर : यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन।
3.अस्थाना, विपिन अस्थाना, श्वेता, मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।
4.शर्मा, बी॰एल॰ (1992). मनोविज्ञान, मेरठ : इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस प्रकाशन।
5.गुप्ता, एस॰पी॰ (1992). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद : शारदा प्रकाशन।

6.श्रीवास्तव, डॉ॰ पी॰ (1995). शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर प्रकाशन।
7.सिंह, अरूण कुमार (2001). शिक्षा मनोविज्ञान, पटना : भारती भवन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स।
8.गुप्ता, डॉ॰ एस॰पी॰ एण्ड गुप्ता, डॉ॰ अल्का (2008). सांख्यिकीय विधियां, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स।
9.रायजदा, डॉ॰ बी॰एस॰एण्ड वर्मा, डॉ॰ वन्दना (2008). शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व, जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
10.कौल, लोकेश (2009). शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, नोएडा : विकास पब्लिशिग हाउस।
11.शर्मा, डॉ॰ आर॰ ए॰ (2010). शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, मेरठ : आर॰ लाल पब्लिकेशन।